भाँति, जब श्रीकृष्ण युद्ध करने की आज्ञा देते हैं तो यह निश्चित समझना चाहिए कि इस प्रसंग में हिंसा का उद्देश्य परम न्याय के लिए है। अतः अर्जुन को यह भली-भाँति जान लेना चाहिए कि श्रीकृष्ण के लिए युद्ध में हुई हिंसा वास्तव में हिंसा नहीं है और इस ज्ञान से युक्त होकर भगवान् की इस आज्ञा का अवश्य पालन करना चाहिए। आत्मा सर्वथा अवध्य है। इस कारण न्याय के हेतु हिंसा की जा सकती है। शल्यक्रिया का प्रयोजन रोगी को स्वास्थ्य-लाभ कराना है, मारना नहीं। श्रीकृष्ण की शिक्षानुसार अर्जुन की युद्धक्रिया पूर्ण ज्ञान से युक्त है। इसलिए उससे कुछ भी पापफल नहीं बन सकता।

3.2

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही।।२२।।

वासांसि=वस्त्रों को; **जीर्णानि**=पुराने; **यथा**=जिस प्रकार; **विहाय**=त्याग कर; **नवानि**=नये वस्त्र; **गृह्णाति**=ग्रहण करता है; **नरः**=मनुष्य; **अपराणि**=दूसरे; **तथा**=वैसे ही; **शरीराणि**=शरीरों को; **विहाय**=त्याग कर; **जीर्णानि**=जीर्ण हुए; **अन्यानि**=दूसरे; **संयाति**=धारण करता है; **नवानि**=नूतन; **देही**=देहबद्ध आत्मा।

अनुवाद

जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर नये वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार आत्मा पुराने जीर्ण शरीरों को त्याग कर नूतन देह ग्रहण करता है।।२२।।

तात्पर्य

अणु-जीवात्मा देहान्तर करता है—यह एक स्वीकृत सत्य है। हृदय से शक्ति का उद्गम किस प्रकार होता है, यह न बता सकने पर भी आधुनिक वैज्ञानिक आत्मा के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखते। पर वे तक यह मानने को बाध्य हो जाते हैं कि शैशव से कौमार, कौमार से यौवन तथा यौवन से जरा के रूप में देह में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। अन्त में वृद्धावस्था के अनन्तर देहान्तर हो जाता है। इसका वर्णन पूर्व श्लोक में किया जा चुका है।

अणु-आत्मा परमात्मा की कृपा से ही देहान्तर करता है। जिस प्रकार सखा सखा की इच्छा की पूर्ति करता है, उसी भाँति परमात्मा भी जीवात्मा की अभीप्सा पूर्ण करते हैं। वेद, 'मुण्डक' तथा 'श्वेताश्वतर' उपनिषदों में जीवात्मा और परमात्मा को एक वृक्ष पर बैठे हुए दो मित्र पक्षियों की उपमा दी गई है। उनमें से एक (अणु-जीवात्मा) वृक्ष के फलों को खा रहा है, जबकि दूसरा पक्षी (श्रीकृष्ण) केवल अपने उस सखा को देखता रहता है। चिद्गुणों में समान होते हुए भी एक पक्षी तो विषय-वृक्ष के फलों से मोहित हो जाता है, जबकि दूसरा उस सखा की क्रियाओं का